Vol. 4, No. 1 (January 2015) p. 34-41 Sangeet Galaxy
ISSN: 2319-9695

कुमाऊँ के मांगलिक गीत

डॉ.पंकज उप्रेती
एसि0 प्रोफेसर, विभाग प्रभारी संगीत
रा0स्नातकोत्तर महाविद्यालय बेरीनाग
(पिथौरागढ़) उत्तराखण्ड
Email: editorpighaltahimalay@gmail.com

संगीत से सम्पूर्ण विश्व का जड़ एवं चेतन पदार्थ आच्छादित है साहित्य व संगीत किसी भी देश, राज्य, अंचल के निवासियों के विचार तथा जीवन का दर्पण होता है, जिसमें वहाँ के निवासियों की जीवन शैली व सांस्कृतिक परम्पराएं स्पष्ट रूप से अभिव्यक्ति को प्राप्त होती हैं। लोक का अपना संसार होता है, जो अपनी परम्पराओं और संस्कारों में विश्वास करता है। श्रुतियों द्वारा एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक संस्कारों की रेखाएं खिंचती चली जाती है। यदि विचार करें तो हम पाते हैं कि यही रेखाएं हमें अनुशासन में बांधती हैं और सीधा–सरल जीवन जीने की कला सिखलाती हैं। इसके पीछे गीत–संगीत का विज्ञान जुड़ा है। भारतवर्ष के लोक जीवन में गीत–संगीत की ऐसी विविध झांकियों के दर्शन होते हैं। लोक की इन परम्पराओं को गीत रूप में एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचाना आसान है। उत्तराखण्ड के कुमाऊँ मण्डल में भी गीतों की ऐसी परम्पराएं हैं जो इस समाज को हर अवसर पर जोड़ती हैं।

पहाड़ में गीतों की लम्बी श्रृंखला है। इन्हीं में सस्कार गीत हैं जो यहाँ की प्रकृति, और भौगोलिक स्थितियों के अनुसार गूंथे हुए हैं। वर्तमान की आपाधापी में नई पीढ़ी दूसरे ही संस्कार अपनाना चाह रही है तो स्वाभाविक है कि वह संस्कार गीतों को भी कैसे याद रख सकती है? जबकि अपने से दूर होते ही हम संसार के बीहड़ में बिलुप्त से हो जाते हैं। इसलिये जरूरी है कि गीत–संगीत के माध्यम से हमारे बुजुर्गों द्वारा जो सीख हमें दी है उसे उसी अंदाज में जीवित रखा जाए। पहाड़ के लोकव्यवहार में मैंने देखा है कि किसी कार्य के लिये जो कर्मकाण्ड होते हैं उसी से जुड़े हुए गीतों को महिलाओं द्वारा गाया जाता है। पूजा–पाठ के समानान्तर गीतों की झड़ी सी लगा देने वाली हमारी माताएं धन्य हैं। राम–सीता हमारे आदर्श हैं, इसलिये संस्कार गीतों रामीचन्द्र–लछीमन सीता राणी/रानी बार–बार आते हैं। तमाम प्रसंगों में इन आदर्शों का नामोल्लेख करने के बाद परिजनों के नामों को लिया जाता है।

लोक जीवन की ठैठ बोली में गाये जाने वाले इन गीतों का अपना शास्त्र होता है। ऐसा नहीं है कि जो गीत इस लेख में दे दिये गये हैं उनकी पंक्तियों में लोक के गायक हेरफेर न करें, ऐसा हो सकता है क्योंकि यह इनका हाथों–हाथ गीत तैयार करने का तरीका है। फिर लोक के यह गायक आशुकवि भी हैं जो हाथों–हाथ अवसर के गीतों को तैयार करने में माहिर होते हैं। गिदार/गितार/गायक महिलाएं जानती हैं कि किस क्रम में कौन सा गीत होगा। साथ ही जिस परिवार में ऐसा अवसर आया है, उस परिवार के अनुसार नामोल्लेख भी होना है। इस लोक से उस लोक तक पीढ़ियों का स्मरण करने वाली यह परम्परा अद्‌भुत है। यदि इसकी गहराई में चले जाओ तो आँखें नम हो जाती हैं। शायद यही लोक का व्यवहार भी है जो हमें सद्‌भावना–सद्‌आचार सिखाता है।

कुमाऊँ का लोक लोक संगीत, यहाँ के लोक गीत, लोक गाथाओं आदि में निहित है। यहाँ का संगीत जिस मधुरता के साथ व्यक्त होता है, वह यहाँ के तीज–त्यौहारों, उत्सवों, विवाह आदि संस्कारों में दिखाई देता है। यहाँ के पर्व उत्सव तथा त्यौहार एक–दूसरे के साथ इस प्रकार घुले–मिले हैं कि इससे सारा लोक जीवन अपनी लोक संस्कृति की एक विशिष्टता धारण किये हुए है।

बदलते समय के साथ हमारी इस परम्परा में भी बदलाव आया है और ठैठ कुमाउनी बोली के साथ–साथ खड़ी बोली में भी संस्कार गीत होने लगे हैं। जमाने की चकाचौंध में झूम रही नई पीढ़ी तो लोक की इन विधाओं से दूर अपने मन मुताबिक थिरकने में विश्वास कर रही है। इतना सब होने के

बावजूद लोक का यह शास्त्र, लोक का यह विज्ञान, लोक का यह तर्क अपनी जगह है। प्रस्तुत हैं कतिपय गीत जो कर्मकाण्ड के साथ–साथ यहाँ के लोक में सुनाई देते हैं–

शकुनाखर (मंगलाचरण)

शुभकार्य आरम्भ होने पर गणेश भगवान का स्मरण करने साथ ही शकुन गीत गाये जाते हैं। इस गीत में महिलाओं के नाम में पहली पत्नी को 'सुन्दरी' और दूसरी पत्नी होने पर उसे 'मंजरी' कहा जाता है। बेटियों के नाम के आगे 'देही' कहा जाता है।

शकूना दे शकूना दे सव सिद्ध, काज ये अति नीको शूकना बोल्या।
दाईना बजन छन, शँख शब्द, दैणी तीर भरियो कलेश।
अति नीको सो रंगोलो, पटलोआँचली कमलै को फूल।
सोही फूलू मौलावन्त, गणेश रामीचन्द्र लछीमन लवकुश,
जीवा जनम आध्या अम्बरू होय।
सोही पाट पैरी रहना, सिद्धि बुद्धि सीतादेही बहुराणी।
आयुवन्ती पुत्रवन्ती होय सोही फूलू मोलावन्त
(परिवार को पुरुषों के नाम)
जीवा जनम आध्या अम्बरू होय।
सोही पाट पैरी रहा, सिद्धि बुद्धि
(परिवार की महिलाओं के नाम सुन्दरी, मंजरी आदि)
आयुवन्ती पुत्रवन्ती होय।।

भावार्थ– शकुनांखर गाओ, अति सुन्दर शुभ कार्य हो रहा है। दाहिनी ओर मधुर शंख घण्ट बज रहे हैं और कलश भरा हुआ रखा है। रंगीन पाट के आंचल में कमल का फूल रखा है, जिसे गणेश जी, रामचन्द्र जी, लक्ष्मण जी, लवकुश जील लाए, वे युग–युग जियें अमर रहें। वही पाट पहनने वाली सिद्धि बुद्धि सीतादेही सदा सौभाग्यवती पुत्रवती हों। वही फूल लाए 'पुरुषों–बालककों के नाम' वे युग–युग जीते रहे, अमर रहें। उनकी सुहागिनें– सुन्दरी/मंजरी सदा सौभाग्यवती पुत्रवती हों।

न्यूतणौ (निमन्त्रण देना)

शुभकार्य के लिये सूर्य, चन्द्रमा, देवताओं सहित सभी ईष्ट–मित्रों को निमंत्रण देने का रिवाज मांगलिक गीतों में है–

प्रातहि न्यूत में सूरज किरन को अधिकार,
सन्ध्या न्यूत में चन्द्रमां तारन को अधिकार।
ब्रह्मा विष्णु, न्यूत में काज सो ब्रह्मा, विष्णु सृष्टि रचाय
गणपति न्यूत में काज सौं, गणपति सिद्धि ले आय।
ब्राह्मण न्यूत में काज सौं सुहागिनी, न्यूत में काज सौं।
कामिनी न्यूत में काज सौं ब्राह्मण वेद पढ़ाय।
सुहागिनी मंगल गाय, कामिनी दियो जगाय।
शंख–घंट न्यूत में काज सौं मालिनी न्यूत में काज सौं।
भ्यूरिय न्यूत में काज सौं शंख .घंट शब्द सुनाय।
मालिनी फूल ले आय, भ्यूरिया दूबो ले आय।

कुम्हारिनि न्यूत में काज सौं विवरिनी न्यूत में काज सौं।
अहोरिनी न्यूत में काज सौं कुम्हारिनी कलश ले आय।
धिवरिनि शकुन ले आय, अहीरिनि दूध ले आय
गूजरिनि दइया ले आये।
बहिनियॉ न्यूत में काज सौं बान्धव न्यूत में काज सौं
,बहिनियां रोचन ले आय, बान्धव शोभा ले आय।
बढ़इया न्यूत में काज सौं ब़ढइया चौको ले आय।
वाजिन्न बाजो ले आय समाए बधायो न्यूंतिये।

भावार्थ– प्रातःकाल में सूर्य और सायंकाल को चन्द्रमा को निमंत्रण देती हूं। क्योंकि उनका अधिकार है, सूर्य की किरणें व चन्द्रमा की ज्योति फैलेगी, तारे जगमगाएंगे। श्रृष्टि रचाने वाले ब्रह्मा–विष्णु को निमंत्रण देती हूँ, हर कार्य सिद्ध करने वाले गणेश जी को भी निमंत्रण। ब्राह्मणों, सुहागिनों, कामिनी को निमंत्रण क्योंकि वह वेद पढ़ना, मंगलगान और दीप जलायेंगी। इसी प्रकार शंख–धंट अपने शब्द सुनायेंगे, मालिन फूल लायेगा, कुम्हार कलश, अहीरिन दूध, गुजरिया दही, बहिन रोली–अक्षत, बढ़ईया चौका बनाकर लायेगा, बाजेवाले बधाई के गीत बजायेंगे। इन सभी को निमंत्रण।

गणेश पूजा

शुभ कार्य के आरम्भ में गणेश जी की पूजा की जाती है। वह निर्विघ्न कार्य सम्पन्न करने वाले देवता हैं–

जय.जय गणपति जय.जय हेरम्भ, सिद्वि विनायक एक दन्त
एक दन्त शुभ्र कर्ण गॅवरि के नन्दन, मृष को वाहन सिन्दुरि सो है।।
गावत सुर नर बोलन्त कुलयधु अग्नि बिना हो नहीं,
बह्मा बिना वेद नहीं।
पुत्र धन दायक यज्ञन रच, शुभ जय गणपति लगन की वेर ए
आरम्भ रचिये ले शंकर, देव, मोती माणिक होरा चौक पुरीय ले।
सुवरण भरिये कलेशन ए, तसु चौका बैठला रामीचन्द्र
लछीमन विप्र ए।
ज्यों लाई सीता देवी, बहुराणी काज करै राज रचै।,
फूलन छी फलन छी जाइ की वान्ती ले
फूल ब्यौणी ल्यालो वालो, आपूं रूपीं माणि ए,
मोती माणिक हीरा, चौक पुरोय ले।।

मातृ पूजा

इस गीत के समय लकड़ी के पीले रंग के चौक में रोली अथवा रंग से गणेश–गौरी सहित सोलह मात्राएं बनाई जाती हैं, ये देवताओं की पत्नियाँ होती हैं। जो क्रमशः गौरी, पद्मा, शची, मेधा, सावित्री, विजया, जया, देवसेना, स्वधा, स्वाहा, मात्रा, लोमात्रा, धृता, पुष्टि, तुष्टि, आत्मना हैं। जब नववधू के आगमन पर द्वारमात्रा बनाई जाती है, वहाँ पर सात देवियों की पूजा होती है। नववधू उनकी पूजा कर देवी के रूप में गृह प्रवेश करती है–

कै रे लोक उपजनी माई मात्रा देव ए।

कै रे कोखी उपजनी रामचन्द्र पूत ए
लछीमन पूत ए चल तुमी माई मात्रा इनूं धरी आज ए
इनू धरो धौला हरा काज सोह ए।
कौशल्या राणी कोखी उपजनी रामीचन्द्र पूत ए।
सुमित्रा राणी कोखी उपजनी लक्षमन पूत ए।
माथ लोक उपजनी माई मात्रा देव ए।
चल तुमो माई मात्रा इनू घरी आज ए।
इनूं घरी धौली हरा काज सोई ए।
(महिलाओं सहित कुटुम्ब का पुरुषों का नाम)
(अमुम कोखी उपजनी अमुक पुत ए)
माथ लाक उपजनि माई मात्रा इनूं घरी आज ए।
इनू घरो धौली हरा काज सोइ ए।

बसोद्धारा

किसी शुभ कार्य में मातृ पूजन में घृत से सप्तधार दी जाती है जिसे बसोद्धारा कहते हैं। गिदार/गायिका कहती गाती हैं– उसी पवित्र घी को रामचन्द्र–लक्ष्मण माथे पर लगाते हैं और सीता जी अपना श्रृंगार करती हैं–

वसोद्धारा बसोद्धारा धार उघारा
तसू घृत ले रामीचन्द्र लछीमन माथ भराए
वसोद्धारा बसोद्धारा धार उघारा
तसू घृत ले सीता देही बहुराणी श्रृंगार करए
तसु घृत ले (कुटुम्ब के पुरुषों का नाम) माथ भराए
तसु घृत ले (कुटुम्ब की महिलाओं का नाम) श्रृंगार कराए।

आवदेव (पितृपूजन गीत)

शुभ कार्यों में पितृपूजन होता है। श्रद्धावश वस्त्र, धन, द्रव्य, अनाज, फल, मेवा इत्यादि रखा जाता है और तीन कुल के पितरों के नाम इस पूजा में लिये जाते हैं। अपने पुरखों को याद करते हुए गिदारिनें/गायिकायें गाती हैं– हे भंवर! तुम स्वर्ग जाकर हमारे पितरों को निमंत्रण दे आओ....

जाना जाना भॅवरिया माथ लोक
माथ लाक पितरन न्यूंत दे आए।
नौं नीं जाणन्यूं गौं नीं पछाड़न्यूं
कॉ रे होलो पितरन को द्वार ए
आधा सरग बादल रेखा आधा सरग चन्द्र सूरज ए
आध सरग पितरन का द्वार वॉरे लोली पितरन को द्वार ए
आओ पितरो मध्य लोक, तुमन करणीं न्यूंत छ आंज
स्वर्ग तैं पूछना छन दशरथ ज्यू यो कसू घरी न्यूंतो छ आज
जो रे तुम ले नाना छन दूद दोया नेछ पोछा घृत मला
अमृत सींचा रामीचन्द्र लछीमन उसूॅ घरी न्यूंतो छ आज ए
स्वर्ग तैं पूछनी छन कौशल्या राणी ज्यू यौ सुमित्रा राणी ज्यू

यो कसो बहुअन ले गोत्र बढ़ायो ए।
जो तुमन लै बड़ा कुल की बड़ा बंश की बहुआ आणी
उसू बहुअन ले गोत्र उज्यारो ए जो रे तुमन लैं
नाना छन उर ही में बोका, भीमें छोड़ा उसू धरीं
न्यूतो छ आज ए कसिकै ऊॅलो पूत नातियो
(कुटुम्ब का पुरुषों नाम) लंका छोडी पॉ न पहुचे,
नजर न सूझें सुनियो ललो पितरो खुटकूॅणौं
रूपती लैलो किवाड़ ऐ छी रया तुम पुत नातियो
लाख बरीस बहुआ तुमरी जनम आयुवन्ती
बहुआ तुमरी जनम पुत्रवन्ती ए जो रे काज
पूत नातियो हमन बलूंछा सोरे काज अति नीका ए
सो रे काज सर्व सिद्ध ए

पुण्याहबाचन

पुण्याहवाचन में यजमान अपने पुरोहित/ब्राह्मण से कार्य सिद्धि, पुण्य व शान्ति का आशीर्वाद मांगते हैं कि उनके कार्य निर्विघ्न पूर्ण हों–

रामीचन्द्र लछीमन धरणी धराय हो धरणी धराय
सीता देही बहू राणी दियो बड़ो दानत बड़ी रे
अविय ले सम्पत्ति पुरिलये दियो बड़ी दान त
ऐवान्ति मंगल देली त ब्राह्मण वेद पढ़े।
सुहागिनी मंगला देली त ब्राह्मण वेद पढ़े।

कलश स्थापन

शुभ कार्य में पंचांग कर्म पूजा की जाती है जिसमें कलश स्थापना का महत्व है। इसमें गाये जाने वाले गीत के तीन भाग हैं। पहले भाग में कलश स्थापना जिन वस्तुओं से की जाती है, दूसरे में इस शुभ अवसर पर कौन–कौन भागीदारी करने आते हैं और तीसरे भाग में पूजा करने वालों का परिचय नाम लेकर दिया जाता है–

धरती धरम लै कलश थापि ले
आजू भरियो कलश आज बधावन नगरी सुहावन
सप्त धान्य ले कलश थापि ले
तामा का कुम्भ ले कलेश थापि ले
आज भरियो कलेश आज बधावन नगरो सुहावन
गंग जमुन का नीर ले कलेश थापि ले
आजु भरियो कलश आज बधावन नगरी सुहावन
दधि–दूध–.घृत ले कलेश थापि ले
हल्दी की गॉठि ले कलश थापि ले
साई का अक्षतन ले रेशमी वस्त्र ले
तेसूत्रा धागा ले कलश थापि ले
फूल.दूध ले कलश थापि ले

गाई का गोबर ले कलेश थापि ले
खेत का जौंने ले कलश थापि ले
आजु भरियो कलश आज बधावन नगरी सुहावन ,
लाड़ सुवांलन ले कलश थापि ले
फोणी बातसन ले थापि ले सर्व धान्य सर्व औषधिन ले
कलश थापि ले, धन द्रव्य लै कलेश थापि ले
आज भरियो कलश, आजु बधावन नगरी सुहावन
0 0 0 0 0 0 0
जहाँ धरियो है भरियो कलश, जहाँ वॅचता इनि मंगल गाइए
जहाँ ताइनि मंगल गाये, तहाँ ब्रह्मा विष्णु सृष्टि रचाइये
जहाँ गणपति सिद्धि ले आइए
तहाँ शख.घंट शब्द सुनाइये, जहाँ शंख.घंट शब्द सुनाये
तहाँ ब्राह्मण वेद पढ़ाइये, जहाँ ब्राह्मण वेद पढ़ाये, तहाँ सुहागिनि मंगल गाइये सुहागनि मंगल गायें
तहाँ मालिनी फूल ले आईए जहाँ भ्यूरिया दूबो ले आयो,
तहाँ कुम्हारिनि कलश ले आइए जहाँ कुम्हारिनि कलश ले आई
तहाँ अहीरिनि दूध ले आइए जहाँ अहीरिनि दूध ले आई
तहाँ गुजरिनि दइयो ले आइए धिबरिनि शकुनो ले आइये
हलनाई चीनी ले आइए बढ़इया चौकी ले आइये
वाजित्र बाजो बजाइए, बहिनियां रोचन ल्याइए,
देरानी जेठानी मिलि आइए
0 0 0 0 0 0 0
तुम रामीचन्द्र लछीमन कवन के पूत तुम कवन मय्या लै
उरधरे तुम कवन उहूं के बालम तुम कवन बहिनियां के वीरन
हम रामीचन्द्र लछीमन दशरथ के पूत मैया कौशल्या राणी
लै उर धरो मेरी मय्या सुमित्रा राणी लै उरधरो
उरधरो है लला दश मास।
हम बहुआ सीता देहि के बालम हम बहुआ
उर्मिला देहि के बालम हम बहिनी सुभद्रा देहि के वरीन
(इस प्रकार कुटुम्बी जनों के नाम को उच्चारण करना है)

नव ग्रह पूजा

नवग्रह पूजा गीत में मंगल करने वाले देवों का स्मरण करते हुए घर विशेष में मंगल ही मंगल दिखाई दे रहा है। क्योंकि सभी देवी–देवता वहाँ पधार रहे हैं–

जै मंगल शुभ मंगल ऊन शुभ मंगल इनू घरि आये आज ए।
गावन्त मंगल, बोलन्त शुभ मंगल ऊन शुभ मंगल इनूं घरि आज ए
हंस बाहन चढ़ि ब्रह्मा ज्यू चलि आया ऊन शुभ मंगल धरि आज ए
गरुड़ वाहन चढ़ि विष्णु ज्यू चलि आया ऊन शुभ मंगल धरि आज ए
बृषभ़ वाहन चढ़ि शम्भू ज्यू चलि आया ऊन शुभ मंगल धरि आज ए
सिंह़ वाहन चढ़ि दुर्गा देवी चलि आया,

मूष वाहन चढ़ि गणेश ज्यू चलि आया,
हस्ति वाहन चढ़ि इन्द्र ज्यू चलि आया ऊन शुभ मंगल धरि आज ए
रथ वाहन चढि सूर्य ज्यू चलि आया ऊन शुभ मंगल धरि आज ए
मृग़ वाहन चढ़ि चन्द्र ज्यू चलि आया
भेष वाहन चढ़ि भौम ज्यू चलि आया
सिंह वाहन चढ़ि बुध ज्यू चलि आया
हस्ति वाहन चढ़ि गुरु ज्यू आया ऊन शुभ मंगल धरि आज ए
अश्व वाहन चढि शनि ज्यू आया
सिंह वाहन चढ़ि राहु ज्यू चलि आया
गृध वाहन चढि केतु ज्यू चलि आया ऊन शुभ मंगल धरि आज ए
अधिदेवता प्रत्याधि देवता चलि आया, ऊन शुभ मंगल धरि आज ए
औरे देवा होला मण्डप बाहर ए,
योरे देवा पूजियन लै सर्वसिद्धि होली,
ऊंन शोभा मंगल ईनूं घरी आज ए।।

अग्नि स्थापना

होम के लिये अग्नि प्रज्वलित करते समय गिदार/गायक गाते हुए अग्निदेव का आह्वान करती हैं कि चारों दिशाओं में हेरा–फेरा/घूम आया अग्निदेव नहीं मिले। अन्त में पीपल के पेड़ के नीचे वैश्वानर मिले, हाथ में धोती बगल में पोथी थी। तुम्हारे बिना कोई काज सिद्ध नहीं हो रहा है।.....कैसे आऊँ वहाँ तो सबकुछ उल्टा ही हो रहा है.....सबकुछ ठीक होता है और वैश्वानर देव आते हैं–

पूर्व को देश मैंल हेरो फेरो नहिं पाया वैश्वानार देव ए नहिं
पाया पश्चिम को देश मैले हेरो फेंरो नहिं पाया वैश्वानर देव ए नहिं पाया।
उत्तर को देश मैंले हेरो फेरो नहिं पाया वैश्वानर देव ए नहिं पाया दक्षिण को देश मैंले हेरो फेरो, नहीं
पाया वैश्वानर देव ए नहिं पाया, पीपल की डाली मुणीं पाया छन वैश्वानर देव ए पाया छन हात
धोती कोख पोथी पाया छन वैशवानर देव ए पाया छन
चल तुमी वैश्वानर मध्य लोक तुम बिना होम नहीं यज्ञ
ए तुम बिना कसि करीं ऊँलो तुमरा देश विपरीत चलिए
तुमरा देश, सासु वां तो लिपो घैंस ब्वारी वां त चौका
बैठ विपरीत चला ए तुमरा देश।
जेठो भाई पाया चली कॉसो भाई घोड़ी चढ़ी विपरीत चाल ए तुमरा देश।
तुमन बिना गाई रैंया बॉध्या, बालो रैगी बटु कन्या रैगे
क्वारी तुमन बिना अब लेली सूधी रीत चाल ए अब
लेलीं ब्वारी वां तो लिपो घैंस सासु वॉ त चौंका बैटि अब होली।
अब होलो जेठो भाई गोड़ी चढ़ी, कॉसो भाई पाया चलो सूधीरीत चाम ए व होली।
हाथ धोती कॉख पेाथी आया छन वैश्वानर देव ए आया छन।

होम

यज्ञ करते समय इस प्रकार के गीत समानान्तर चलते रहते हैं–

धिय की गगरी बड़ाऔ रे बटुवा पाननले मंडवा छवाओ रे बटुव

श्रीखंड दार लगाओ रे बटुवा लौंगन की बाड बंधाओ रे बटुवा
तब तेरी आहुति देत श्याम, वेद पढ़ि झम्टि रहें नारायण बटुवा
किसके कुल तुम उपजरो बटुवा कवन के तुम नाती पूत श्याम
वेद पढि झम्टि रहे नारायण बटुवा।
दशरथ के कुल उपजो रे बटुवा दशरथ के हम नांती,
रामीचन्द्र के हम पूत श्याम वेद पढ़ि झम्टि रहे नारायण बटुवा
को तेरी आहुति देत श्याम वेद पढ़ि झम्टि रहे नारायण बटुवा
अर्जुन वेदी बॉधो दे बटुवा रामीचन्द्र आहुति देत
श्याम वेद पढि झम्टि रहे नारायण बटुवा
(इसी प्रकार कुटुम्बिजनों के नाम को उच्चारण करते हैं।)
0 0 0 0 0 0 0 0
बालो ए बैश्वानर मानूर।
लियौ वेदी वैश्वानार समिध वैसेटी को होम।
लीयो वैदी वैश्वानर समिध को होम,
तील को होम जौं को होंम, घृत को होम ए।
बालो ए वैश्वानर मानूर लीयौ बेदी वैश्वानर लाडू को होम
सुवालो को होम, रोहिणी को होम, फूल दुबो को होम ए।
बाला ए वैश्वानर मानूर लीयौ बेदी वैश्वानर,
अणत को होम रामीचन्द्र ठोया ठोया होम करला,
लछीमन बेदान्त का अगला होला ए
लछीमन ठोया ठोया होम करला।
लव कुश वेदान्त का अगला होला ए।

इस प्रकार सभी अवसरों के अनगिनत गीत लोक की वाणी में हैं। समय के साथ गीतों के प्रकार बदले हैं, यहाँ तक कि कई पुराने गीत लुप्त हो चुके हैं। सारे संस्कारों के अलावा पूजा–आरती में कई प्रकार के गीत व त्यौहारों में गाये जाने वाले गीतों का प्रचलन अभी तक जिस भी रूप में है, उसे संरक्षित तभी किया जा सकता है जब कि उसे व्यवहार में उतारा जाए।

सन्दर्भ–

1. ''बदलते समय मे कुमाऊँ के त्यौहार'', कुमाऊँ महोत्सव स्मारिका नैनीताल, 1997, पृष्ठ 66
2. ''लोक संगीत को जीवन्त करना होगा'', पिघलता हिमालय साप्ताहिक समाचार पत्र पृष्ठ–3
3. मांगलिक गीतों के अवसर पर गंगोलीहाट, बेरीनाग, हल्द्वानी, नैनीताल, अल्मोड़ा इत्यादि क्षेत्रों में लेखक द्वारा भ्रमण व मांगलिक गीत गायिकाओं से भेंट के आधार पर।
4- Website- www.pighaltahimalayl.com की वीडियो गैलरी ''संस्कार गीत'', जिसे गंगोलीहाट के कुंजनपुर ग्राम की परम्परागत गायिकाओं ने लेखक के अनुरोध पर गाया।
5. संगीत नाटक अकादमी नई दिल्ली द्वारा गांधी भवन, पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़ में आयोजित 'वृहद्देशीय संगीत महोत्सव' में प्रस्तुत शोध पत्र एवं स्मारिका में प्रकाशित, 27–31 अक्टूबर 2002